विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

विदेशों में हिंदी पत्रकारिता की गौरव गाथा

भारत में और विशेष रूप से हिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी पत्रकारिता के अस्तित्व और इसकी विकास यात्रा से हम सब कमोबेश परिचित हैं। कभी–कभी थोड़ी बहुत चर्चा हिंदीतर क्षेत्रों में हिंदी पत्रकारिता की भी हो जाया करती है, हालांकि उसके बारे में सामान्य जन की जानकारी बहुत ही अल्प है। वैसे भी, आम पाठक केवल इतना जानता है कि वर्तमान में कौन–कौन से समाचार पत्र उसके इलाके में लोकप्रिय हैं। इससे अधिक जानने में उसकी रुचि प्रायः नहीं होती है। यह रुचि होती है पत्रकारिता के अध्येताओं में। वे न केवल वर्तमान में चल रही पत्रकारिता का अध्ययन और विश्लेषण करते हैं, वे उसके अतीत में भी जाते हैं और किसी क्षेत्र विशेष में पत्रकारिता के उद्गम और उसकी विकास यात्रा का अध्ययन करते हैं। और यह भी उनके अध्ययन का एक अंश मात्र होता है। वे बहुत गहराई में जाते हैं। उनका किया यह अध्ययन न केवल पत्रकारिता की विकास यात्रा का दस्तावेज़ीकरण करता है, वर्तमान एवं भावी पत्रकारिता का मार्गदर्शन भी करता है।

लेकिन जैसा मैंने कहा, जब हम हिंदी पत्रकारिता की बात करते हैं तो प्रायः हमारी नज़र हिंदी क्षेत्र की सीमा का उल्लंघन नहीं कर पाती है। बहुत हुआ तो हम हिंदी क्षेत्र की परिधि पर स्थित हिंदीतर क्षेत्र की बात कर लेते हैं। लेकिन जो पत्रकारिता के सच्चे अनुरागी और गम्भीर अध्येता हैं वे देश की परिधि को लांघ कर दुनिया भर की खाक छानते हैं और यह उनकी ही मेहनत का सुफल है कि हम यह जान पाते हैं कि हिंदी पत्रकारिता भारत की सीमाओं के बाहर भी खूब फल–फूल रही है। हिंदी पत्रकारिता के ऐसे ही एक गम्भीर अध्येता है डॉ. जवाहर कर्नावट। उनकी एक किताब हाल में नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रकाशित की है जिसमें डॉ. कर्नावट ने दुनिया भर के सत्ताइस देशों की हिंदी पत्रिकारिता का अत्यंत विशद और गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। बहुत रोचक बात यह है कि डॉ.कर्नावट मूलतः एक बैंकर रहे हैं और बैंक ऑफ बडौदा से महाप्रबंधक के रूप में सेवा निवृत्त हुए हैं। इसलिए हिंदी पत्रकारिता का यह अध्ययन उनकी पेशेगत आवश्यकताओं का प्रतिफलन न होकर विशुद्ध रूप से उनकी रुचि का सुफल है। डॉ.कर्नावट ने अपनी ज़िम्मेदारी भरी नौकरी की व्यस्तताओं के बीच यह अध्ययन करना शुरू किया और फिर सेवा निवृत्त हो जाने के बाद पूरे जी–जान से इसमें जुटकर इसे वर्तमान रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इस किताब की भूमिका में वे लिखते हैं, "विश्व के विभिन्न देशों की हिंदी पत्रकारिता के समृद्ध इतिहास को संकलित करने की दृष्टि से मैंने पिछले बीस वर्षों में एशिया, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीपों के अनेक देशों की यात्राएं की। इन देशों के राष्ट्रीय अभिलेखागारों, राष्ट्रीय पुस्तकालयों के साथ ही प्रमुख संस्थाओं एवं व्यक्तियों से संपर्क कर 27 से अधिक देशों से पिछले 120 वर्षों में प्रकाशित हुई लगभग 150 पत्र–पत्रिकाएं प्राप्त कर उनकी विषय वस्तु का अध्ययन किया।" पुस्तक में न केवल मुद्रण पत्रकारिता को अध्ययन का विषय बनाया गया है, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रसारण पत्रकारिता को भी इसमें समेटा गया है। कल्पना की जा सकती है कि यह काम कितना प्रयत्न व श्रम साध्य रहा होगा। अपनी भूमिका में डॉ. कर्नावट ने एक और ख़ास बात कही है जिससे इस किताब की प्रकृति का परिचय मिलता है। वे कहते हैं: "विश्व के अनेक देशों में हिंदी पत्रकारिता की यात्रा कुछ पत्र–पत्रिकाओं के छपने–बंटने तक सीमित नहीं थी। उसका इतिहास भारतीयों की विश्व यात्रा के संघर्ष, पीड़ा और सुखद प्रतिष्ठापन तक के सफर का अहम दस्तावेज़ है।"

डॉ. कर्नावट ने अपनी इस किताब के चार खण्डों के कुल 22 अध्यायों में दुनिया भर के देशों में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास और वर्तमान का आकलन किया है। पहला खण्ड है 'गिरमिटिया देशों में हिंदी पत्रकारिता।' इस खण्ड में मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, फीजी, सूरीनाम, गयाना और त्रिनिदाद–टुबैगो में हिंदी पत्रकारिता के अतीत और वर्तमान की छवि उकेरी गई है। यह बात सर्वविदित है कि उन्नीसवीं शताब्दी में भारत से बहुत बड़ी संख्या में गिरमिटिया मज़दूर यूरोपीय देशों के उपनिवेशों में ले जाए गए थे। "अपनी जड़–ज़मीन से दूर जाते समय ये गिरमिटिया मज़दूर अपने साथ गंगाजल, तुलसी और रामचरितमानस का गुटका लेकर गए थे। इस प्रकार उन्होंने अपनी विवशता की विदेश यात्रा को परदेश में स्वदेश रचने की सांस्कृतिक यात्रा में बदल दिया।" अधिकांशतः अवधी और भोजपुरी क्षेत्रों से गए इन मज़दूरों ने अपना खून–पसीना बहाकर नई दुनिया रची और ऐसा करते हुए प्रतिरोध, असहमति, सूचना, संवाद, एकजुटता, जागृति के लिए ज़रूरी संवाद–संचार के माध्यम के रूप में पत्रकारिता को अपनाया। इन गिरमिटिया मज़दूरों ने हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से न केवल आत्माभिव्यक्ति की, ऐसा करते हुए नई ऊर्जा भी प्राप्त की। यहीं यह स्मरण कर लेना भी उपयुक्त होगा कि सन 1893 में प्रिटोरिया पहुंचे मोहन दास कर्मचंद गांधी सन 1903 में जोहानसबर्ग पहुंचे थे और उन्होंने वहां से चार जून 1903 को 'इण्डियन ओपीनियन' नामक पत्र निकाला था। इस पत्रिका के दूसरे ही अंक में हिंदी प्रजा की स्थिति शीर्षक टिप्पणी में गांधीजी ने अंग्रेज़ों द्वारा गिरमिटियाओं पर किए जाने वाले अत्याचारों का विवरण दिया था। मॉरीशस में मणिलाल ने 1909 में हिंदुस्तानी का प्रकाशन गुजराती/अंग्रेज़ी में शुरू किया लेकिन एक वर्ष बाद ही इसकी भाषा बदल कर हिंदी कर दी गई। किताब का दूसरा खण्ड है उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के देशों में हिंदी पत्रकारिता। इस खण्ड में अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, और न्यूज़ीलैण्ड में हिंदी पत्रकारिता का विस्तृत परिचय दिया गया है। किताब का तीसरा खण्ड है यूरोप महाद्वीप के देशों में हिंदी पत्रकारिता और इस खण्ड में ब्रिटेन, नीदरलैण्ड, जर्मनी, नॉर्वे, हंगरी–बुल्गारिया और रूस में हिंदी पत्रकारिता की दशा और दिशा का परिचय दिया गया है। किताब का आखिरी खण्ड है एशिया महाद्वीप के देशों में हिंदी पत्रकारिता', और इस खण्ड में जापान, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत और कतर, चीन और तिब्बत, सिंगापुर, म्यांमार, श्रीलंका और थाइलैण्ड, और नेपाल में हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा का परिचय दिया गया है।

जब हम हिंदी पत्रकारिता की बात करते हैं तो प्रायः हमारी नज़र हिंदी क्षेत्र की सीमा का उल्लंघन नहीं कर पाती है। बहुत हुआ तो हम हिंदी क्षेत्र की परिधि पर स्थित हिंदीतर क्षेत्र की बात कर लेते हैं। लेकिन जो पत्रकारिता के सच्चे अनुरागी और गम्भीर अध्येता हैं वे देश की परिधि को लांघ कर दुनिया भर की खाक छानते हैं और यह उनकी ही मेहनत का सुफल है कि हम यह जान पाते हैं कि हिंदी पत्रकारिता भारत की सीमाओं के बाहर भी खूब फल-फूल रही है।

विद्वान लेखक ने हर खण्ड में सम्बद्ध देश में भारतीयों की स्थिति की चर्चा करने के बाद वहां से निकलने वाली हिंदी पत्र–पत्रिकाओं की प्रामाणिक जानकारी दी है। इस पूरी जानकारी को पढ़ते हुए हमें सहज ही इस बात पर गर्व होता है कि अपने देश में भले ही हम हिंदी की वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट हों, विदेशों में रह रहे भारतीय हिंदी पत्रकारिता की मशाल को जलाए रखने में कोई कसर नहीं छोड रहे हैं। किताब में विभिन्न देशों से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं की तस्वीरें तो हैं ही, लेखक ने अंत में उन महानुभाव का भी नामोल्लेख करने में कोताही नहीं बरती है जिन्होंने उनको यह सारी सामग्री सुलभ करवाई है।

अगर राजनीतिक सहमतियों–असहमतियों और विवादों की बात छोड़ दें तो यह बात निर्विवाद है कि हिंदी लगातार आगे बढ़ रही है। उसमें बहुत सारा सृजन हो रहा है और पूरे देश में वह एक सशक्त सम्पर्क भाषा के रूप में मान्य होती जा रही है। ज्ञान विज्ञान और विचार की भाषा के रूप में उसका निरंतर विकास हो रहा है। विभिन्न भाषाओं से उसमें अनुवाद भी खूब हो रहे हैं और तकनीक ने भी उसे और उसने तकनीक को खुले मन से अपनाया है। आज के सूचना प्रौद्योगिकी के समय में कोई भाषा तकनीक से दूरी बरत भी नहीं सकती। हिंदी भी नहीं बरत रही है। इस सबके साथ विद्वानों का एक बड़ा तबका उसकी विकास यात्रा पर भी पैनी नज़र बनाए हुए है। यह बहुत ज़रूरी है। डॉ.कर्नावट के इस काम को मैं इसी नज़र से देखता हूं। लगभग तीन सौ पृष्ठों की यह किताब वैश्विक मंच पर हिंदी की शानदार, सजीव और सार्थक उपस्थिति का परिचय देते हुए हममें गर्व और उत्साह का संचार करती है। लेकिन इस गर्व के साथ–साथ हमारा मन उन सबके प्रति बहुत गहरी कृतज्ञता से भी भर उठता है जिन्होंने तमाम विषमताओं के बीच अपने–अपने देशों में हिंदी का परचम लहराने का प्रशंसनीय काम किया है। इन सबके प्रयत्नों का ही यह सुफल है कि दुनिया के लगभग सभी देशों में हिंदी की दमदार उपस्थिति हमारा माथा गर्व से ऊंचा कर रही है।

पूरे हिंदी समाज को डॉ. जवाहर कर्नावट के इस बड़े काम का अभिनंदन करते हुए उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

चर्चित पुस्तक: विदेश में हिंदी पत्रकारिता: 27 देशों की हिंदी पत्रकारिता का सिंहावलोकन
लेखक : जवाहर कर्नावट
प्रकाशक: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
पहला संस्करण – 2024. पृ. 300, पेपरबैक मूल्य: 400.00 (बेंगलुरु प्रवास से)

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

जेनेरिक दवाएं: हकीकत से गुमराह करती ब्रांडेड कम्पनियां

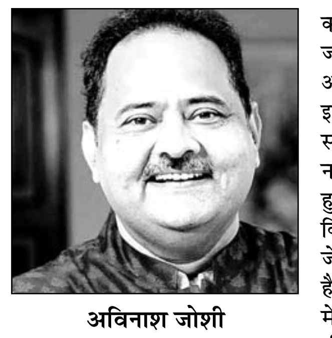

अविनाश जोशी

आज के युग में दवाइयां हर व्यक्ति के जीवन का एक अहम हिस्सा हो गई है। हमारी मासिक आय का एक बड़ा हिस्सा दवाइयों के मद में खर्च हो जाता है। आमतौर पर डॉक्टर्स महंगी दवाएं लिखते हैं इससे ब्रांडेड दवा कंपनियां खूब मुनाफा कमाती हैं लेकिन क्या आप जानते हैं आप चिकित्सक की लिखी सस्ती दवाएं भी खरीद सकती हैं। आपका डॉक्टर आपको जो दवा लिखकर देता है उसी साल्ट की जेनेरिक दवा आपको बहुत सस्ते में मिल सकती है। महंगी दवा और उसी साल्ट की जेनेरिक दवा की कीमत में कम से कम पांच से दस गुना का अंतर होता है। कई बार जेनरिक दवाओं और ब्रांडेड दवाओं की कीमतों में 90 पर्सेंट तक का भी फर्क होता है। जरूरत इस बात की है कि डॉक्टर्स को जेनेरिक दवाएं लिखनी चाहिए। इससे इलाज सस्ता होगा क्योंकि जेनरिक दवाइयां सस्ती होती हैं, दवाइयों का खर्चा भी इससे कम आएगा और कुल मिलाकर इलाज सस्ता हो जाएगा।

जेनेरिक दवाएं हमेशा साल्ट के नाम से बाजार में उपलब्ध होती है अमूमन किसी एक बीमारी के इलाज के लिए तमाम तरह की रिसर्च और स्टडी के बाद एक रसायन (साल्ट) तैयार किया जाता है जिसे आसानी से उपलब्ध करवाने के लिए दवा की शक्ल दे दी जाती है। इस साल्ट को हर कंपनी अलग–अलग नामों से बेचती है। कोई इसे महंगे दामों में बेचती है तो कोई सस्ते। लेकिन इस साल्ट का जेनेरिक नाम साल्ट और बीमारी का ध्यान रखते हुए एक विशेष समिति द्वारा निर्धारित किया जाता है। किसी भी साल्ट का जेनेरिक नाम पूरी दुनिया में एक ही रहता है। अधिकत्तर बड़े शहरों में जेनेरिक मेडिकल स्टोर होते हैं, लेकिन इनका ठीक से प्रचार–प्रसार ना होने के कारण इसका लाभ लोगों को नहीं मिल पाता। मजूबरी में ठीक जानकारी ना होने के कारण गरीब भी केमिस्ट से महंगी दवाएं खरीदने पर मजबूर हो जाता है।

जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं में मुख्य अंतर यह है कि जेनेरिक दवाओं में ब्रांडेड दवाओं के समान ही सक्रिय तत्व होते हैं, लेकिन इनमें गैर–सक्रिय तत्व (एक्सिपिएंट्स) अलग हो सकते हैं। इन अंतरों के बावजूद, जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं का असर शरीर पर एक जैसा ही होता है। जेनेरिक दवाओं को उनके रासायनिक नामों से जाना जाता है। जेनेरिक दवाओं की मार्केटिंग और ब्रांडिंग पर कंपनियां कम पैसे खर्च करती हैं इसीलिए जेनेरिक दवाएं, ब्रांडेड दवाओं से सस्ती होती हैं।

जेनेरिक दवाएँ ब्रांडेड दवाओं के समान रूप से काम करती हैं, क्योंकि वे मूल दवाओं के अक्षरशः समान रूप में सक्रिय घटकों का उपयोग करती हैं। जब दवाओं के रसायन मानकों के अनुसार होते हैं, तो उनका प्रभाव आमतौर पर समान होता है। हालांकि, कुछ मामलों में व्यक्तिगत प्रतिक्रिया में थोड़ी भिन्नता हो सकती है, जो व्यक्ति की शारीरिक या चिकित्सा दशा पर निर्भर करती है।

मानोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यह सच है कि व्यक्तिगत मानसिक स्थितियों और प्रतिक्रियाओं में अंतर हो सकता है जब किसी दवा का उपयोग किया जाता है। कुछ लोगों के लिए जेनेरिक दवाएँ काम कर सकती हैं, जबकि दूसरों के लिए वे कम प्रभावी महसूस हो सकती हैं। मानसिक स्वास्थ्य और उपचार की स्थिति व्यक्तिगत होती है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि किसी भी दवा का उपयोग करने से पहले एक विशेषज्ञ चिकित्सक से परामर्श किया जाए। जेनेरिक दवाएँ के लिए अक्सर सभी देशों में विशेष कानून नहीं बना है, लेकिन इनका उपयोग और विपणन बाजार नियमों और गाइडलाइन्स के अधीन होता है। ये दिशा–निर्देशों में उनके गुणवत्ता, प्रभाव, और सुरक्षा के स्तर की देखभाल को सुनिश्चित करने के तरीके शामिल होते हैं।

ब्रांडेड और जेनेरिक दवाओं के बीच यह स्पष्ट अंतर हो सकता है कि ब्रांडेड दवाएँ उनके पेटेंट की सुरक्षा में होती हैं, जिससे उनके तत्वों की नकल नहीं की जा सकती है। जब तक कि ब्रांडेड दवा के पेटेंट का समय समाप्त नहीं हो जाता, जबकि जेनेरिक वैकल्पिक दवाएँ उपलब्ध नहीं होती हैं। जब पेटेंट समय समाप्त होता है, तब अन्य उत्पादक भी उसी सक्रिय घटक का उपयोग करके जेनेरिक दवाएँ बना सकते हैं, अगर वे समान मानकों को पूरा करती हैं। कुछ देशों में जेनेरिक दवाओं की निर्माण और विपणन की दिशा–निर्देशों के तहत नियमित जाँच और मूल्य निर्धारण होता है।

ब्रांडेड दवाओं के मूल्य निर्धारण के लिए यह कुछ दिशानिर्देश हो सकते हैं जैसे प्रतिस्पर्धी बाजार में मूल्य की जांच करें ताकि आप अपने उत्पादों के मूल्य स्तर को समझ सकें। आपके उत्पाद की गुणवत्ता, उपयोगिता और विशेषताओं को भी नजर में रखें। कई बार आम जन जेनरिक दवाओं की गुणवत्ता और प्रभाव पर सवाल उठाते हैं। इसको सुनिश्चित करने के लिए सरकार और सामुदायिक स्वास्थ्य संगठनों को सही कदम उठाने की जरूरत है।

चिकित्सक अक्सर मरीज के रोग और उनकी मेडिकल हिस्ट्री के आधार पर उपयुक्त दवा लिखते हैं। वे यह सुनिश्चित करने की कोशिश करते हैं कि मरीज को सही और प्रभावी उपचार मिले अगर गौर करे तो जेनरिक दवाएं भी सटीक मानदंडों को पूरा करने पर उपलब्ध होती हैं, लेकिन कई बार डॉक्टर ब्रांडेड दवाओं को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा मान्यता और अनुभव का इससे सीधा संबंध होता है। लेकिन यह भी सत्य है कि जेनरिक दवाएं कई बार सस्ती और समान तरीके से प्रभावी होती हैं, और वे सामान्य लोगों के लिए अधिक उपयोगी हो सकती हैं।

जेनेरिक दवाओं की प्रमाणिकता और गुणवत्ता का मूल्यांकन कई मापदंडों पर किया जाता है कि यह मूल ब्रांड के समान या समरूप स्तर पर शरीर में अवशोषित होती है अथवा नहीं हालांकि जेनेरिक दवा की गुणवत्ता उसके सामग्रियों, निर्माता की प्रक्रियाओं और गुणसूत्रों पर निर्भर करती है। इन दवाओं के लिए क्लिनिकल ट्रायल्स किए जाते हैं ताकि उनकी सुरक्षा, प्रभाव और मरीज के सहन करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जा सके। स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय नियामक संगठनों द्वारा जेनेरिक दवाओं के लाइसेंसिंग और पंजीकरण की प्रक्रिया के दौरान भी गुणवत्ता और प्रमाणिकता की मान्यता दी जाती है।

जेनेरिक दवाएं बिना किसी पेटेंट के बनाई और सरकुलेट की जाती हैं। हां, जेनेरिक दवा के फॉर्मुलेशन पर पेटेंट हो सकता है लेकिन उसके मैटिरियल पर पेटेंट नहीं किया जा सकता. इंटरनेशनल स्टैंडर्ड से बनी जेनेरिक दवाइयों की क्वालिटी ब्रांडेड दवाओं से कम नहीं होती। ना ही इनका असर कुछ कम होता है। जेनेरिक दवाओं की डोज, उनके साइड–इफेक्ट्स सभी कुछ ब्रांडेड दवाओं जैसे ही होते हैं।

जहां ब्रांडेड दवाओं की कीमत कंपनियां खुद तय करती हैं वहीं जेनेरिक दवाओं की कीमत को निर्धारित करने के लिए सरकार का हस्तक्षेप होता है। जेनेरिक दवाओं की मनमानी कीमत निर्धारित नहीं की जा सकती। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक, डॉक्टर्स अगर मरीजों को जेनेरिक दवाएं प्रिस्क्राइब करें तो विकसित देशों में स्वास्थय खर्च 70 पर्सेंट और विकासशील देशों में और भी अधिक कम हो सकता है।

कई बार डॉक्टर सिर्फ साल्ट का नाम लिखकर देते हैं तो कई बार सिर्फ ब्रांडेड दवा का नाम। कुछ खास बीमारियां हैं जिसमें जेनेरिक दवाएं मौजूद होती हैं लेकिन उसी सॉल्ट की ब्रांडेड दवाएं महंगी आती हैं। ये बीमारियां हैं जैसे– हार्ट डिजीज, न्यूरोलोजी, डायबिटीज, किडनी, यूरिन, बर्न प्रॉब्लम। इन बीमारियों की जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं की कीमतों में भी बहुत ज्यादा अंतर देखने को मिलता है। जेनेरिक दवाएं सस्ती होने की सबसे बड़ी वजह से है कि उनका कोई प्रचार नहीं होता है। मार्केटिंग के प्रचार पर पैसा खर्च नहीं होता है। प्रचार में कंपनियों का काफी पैसा खर्च होता है। पहले डेवलपर्स के पेटेंट की अवधि समाप्त होने के बाद उनके फार्मूलों और साल्ट का उपयोग करके बनाई जाती हैं। दवा के साथ डॉक्टर के व्यवहार एवम आचरण के महत्व को दर्शाते फहमी बदायूंनी के यह शब्द बहुत कुछ सीखा जाते है।

पूछ लेते वो बस मिजाज मेरा,
कितना आसान था इलाज मेरा।

–अविनाश जोशी,
स्वंतत्र पत्रकार एवम लेखक

'भारतीय सेना कभी भी अपने पूर्व सैनिकों को नहीं भूलती है'

डीडवाना के राजकीय खेल स्टेडियम में सेना की गौरव सेनानी रैली का आयोजन

डीडवाना, (निसं)। डीडवाना के राजकीय खेल स्टेडियम में रविवार को भारतीय सेना की ओर से गौरव सेनानी रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में साउथ वेस्टर्न कमांड के लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने शिरकत की। इस दौरान शहीदों की वीरांगनाओं और युद्धों में भाग लेने वाले पूर्व सैनिकों का सम्मान किया गया। वहीं पूर्व सैनिकों व उनके आश्रितों की अनेक समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया।

इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा कि सैनिक कभी भी भूतपूर्व नहीं होता, बल्कि सेना से मिला अनुभव, अनुशासन और उसका किरदार हमेशा जीवंत रहता है। रिटायरमेंट के बाद भी सैनिक, सैनिक की भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना कभी भी अपने पूर्व सैनिकों को नहीं भूलती और उनके योगदान, वीरता और उनकी शहादत को हमेशा याद रखती है। इसलिए समय–समय पर इस प्रकार की रैलियों का आयोजन किया जाता है, जिनमें पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों की समस्याओं का तुरंत समाधान किया जा सके। लेफ्टिनेंट जनरल ने कहा कि भारतीय सेना और सरकार सैनिकों की हर प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है और उनकी जो भी समस्या होगी, उनका समाधान किया जाएगा। विभिन्न आर्मी स्टेशनों और जहां–जहां आर्मी के कार्यालय मौजूद है, वहां आर्मी सुविधाओं में बढ़ोतरी की जा रही है, ताकि पूर्व सैनिकों को तत्काल राहत प्रदान हो सके।

साउथ वेस्टर्न कमांड के लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने समारोह को संबोधित किया।

- **साउथ वेस्टर्न रीजन के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने शिरकत की**
- **कार्यक्रम में शहीदों की वीरांगनाओं और युद्धों में भाग लेने वाले पूर्व सैनिकों का सम्मान किया**

इस रैली में सेना के विभिन्न विभागों की स्टॉल लगाई गई, जहां सैनिक रिकॉर्ड, एक्स सर्विसमेन कंट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम, आर्मी वेलफेयर प्लेसमेंट, जिला सैनिक कल्याण विभाग, सीएसडी काउंटर, डायरेक्ट्रेट ऑफ इंडियन आर्मी वेटरंस, पीसीडीए (पेंशन), रिकॉर्ड ऑफिस, पूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ईसीएचएस) आदि की स्टॉल लगाई गई। वहीं गौरव सेनानियों, वीरांगनाओं, युद्ध वीरांगनाओं व उनके आश्रितों की समस्याओं व प्रकरणों का मौके पर ही निदान किया गया। रैली के दौरान भारतीय सेना के जवानों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी प्रस्तुतियां दी, जिनमें बैंड वादन, वाइपर बैंड वादन और विभिन्न रेजीमेंट की युद्ध कला कौशल का प्रदर्शन किया।

स्टूडेंट्स के मानसिक स्तर का पता लगाने के लिए देशभर में परख परीक्षा आयोजित होगी

बीकानेर, (निसं)। देशभर के स्कूलों में पढ़ रहे स्टूडेंट्स के मानसिक स्तर का पता लगाने के लिए एक बार फिर केंद्र सरकार की ओर से परख परीक्षा आयोजित की जा रही है। ये परीक्षा इस बार चार दिसम्बर को होगी, जिसमें क्लास तीन, छह और नौ के स्टूडेंट्स एग्जाम देंगे। सरकारी और प्राइवेट स्कूल इस एग्जाम में हिस्सा लेंगे। राजस्थान के स्टूडेंट्स की रिपोर्ट सुधारने के लिए शिक्षा विभाग ने मॉडल टेस्ट पेपर तैयार किए हैं लेकिन स्कूल संचालक इसमें रुचि नहीं ले रहे।

परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 के तहत ये परीक्षा चार दिसम्बर को आयोजित होनी है। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् ने सर्वेक्षण में हिस्सा लेने वाली क्लासेज के लिए मॉडल टेस्ट पेपर तैयार करवाए हैं। इन टेस्ट पेपर को शाला दर्पण साइट पर उपलब्ध कराया गया है। सभी स्कूल संचालकों को इसे डाउनलोड करने के निर्देश भी दिए गए लेकिन अब तक 45 प्रतिशत स्कूल ने ही इसे डाउनलोड किया है। ऐसे में स्कूल शिक्षा परिषद् के निदेशक ने सभी स्कूलों को फिर से निर्देश जारी किए हैं।

शाला दर्पण पोर्टल पर दिए गए मॉडल टेस्ट पेपर से टीचर्स को अपने स्टूडेंट्स को एग्जाम की तैयारी करवानी है। इस निर्देश की पालना नहीं होने से सर्वेक्षण में राजस्थान की स्थिति ज्यादा बेहतर आने की उम्मीद कम है। जिन जिलों में औसत से भी कम मॉडल टेस्ट पेपर डाउनलोड किए गए हैं, उनमें पाली, चूरू, बारां, प्रतापगढ़, झुंझुनूं, झालावाड़, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, सवाई माधोपुर, जोधपुर, दौसा, धौलपुर, बाडमेर, बांसवाड़ा और जालौर शामिल हैं।

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के निदेशक अविचल चतुर्वेदी ने स्पष्ट किया है कि केंद्र सरकार की ओर से चार दिसम्बर को आयोजित रिजल्ट में अगर किसी स्कूल व जिले का रिजल्ट खराब आया तो उसके खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी। इसकी जिम्मेदारी संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी और डाइट प्राचार्य पर डाली गई है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 25 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 1:24 तक, विष्कुम्भ योग रात्रि 1:11 तक, वणिज करण दिन 11:41 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 1:24 से आरम्भ होगा। भद्रा दिन 11:41 से रात्रि 1:02 तक रहेगी। आज भगवान महावीर कल्याणक दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:17 तक, शुभ 9:36 से 10:55 तक, चर 1:33 से 2:51 तक, लाभ-अमृत 2:51 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:58, सूर्यास्त 5:29

मेष
अटके हुए काय बनने लगेंगे। चलते व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

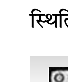

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

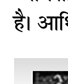

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

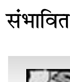

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। संभावित धन प्राप्त होगा।

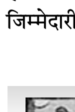

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक एवं आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

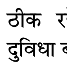

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक विवादों को टालना ठीक रहेगा। पारिवारिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

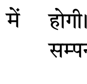

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन नहीं है।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।